इकाई 10 तथ्य विश्लेषण*

इकाई की रूपरेखा

10.0 परिचय

10.1 मानवविज्ञान का विश्लेषणात्मक संग्रथन (मोंटाज)

10.2 गुणात्मक विश्लेषण

10.2.1 तथ्य प्रबंधन : कोडिंग, मेमोइंग और कॉन्सेप्ट मैपिंग

10.2.2 व्याख्यात्मक और प्रदर्शात्मक विश्लेषण

10.2.3 सामग्री विश्लेषण और ग्राउंडेड सिद्धांत

10.3 मात्रात्मक विश्लेषण

10.4 सारांश

10.5 संदर्भ

10.6 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई को पढ़ने के बाद छात्र सीखेंगे :

- क्षेत्र अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण को परिभाषित करना;
- शोधकर्ताओं द्वारा प्रयोग में लाए गए विभिन्न प्रकार के विश्लेषण का वर्णन करना; तथा
- स्वयं संकलित तथ्यों के विश्लेषण हेतु प्रक्रियाओं का उपयोग करना।

10.0 परिचय

इस इकाई में केवल तथ्य विश्लेषण के मुद्दे पर चर्चा होगी, और अगली इकाई में शोध रिपोर्ट लिखने के मुद्दे पर चर्चा जारी रहेगी। हालाँकि, ये दोनों भाग एक–दूसरे से जटिल रूप से जुड़े हुए हैं। शोध रिपोर्ट के रूप में जो प्रस्तुत किया जाता है वह वास्तव में वे परिणाम होते हैं, जिन्हें शोधकर्ता तथ्य विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त करते हैं। यानि शोध रिपोर्ट लिखना वास्तव में उन तथ्यों का प्रतिनिधित्व है, जिसे विभिन्न उपकरणों, तकनीकों और विश्लेषण के विचारों का उपयोग करके संसाधित किया गया है। तथ्यों के विश्लेषण हेतु वास्तव में एकत्रित आंकड़ों या तथ्यों के निहितार्थ को समझने की आवश्यकता होती है।

शोधार्थी होने के नाते हम जानना चाहते हैं कि तथ्य क्या कहते हैं। अतः हम न केवल तथ्यों के एकत्रण में रुचि रखते हैं, बल्कि यह भी जानना चाहते हैं कि यह तथ्य उन सवालों के बारे में क्या बताते हैं, जिनका हम जवाब चाहते हैं।

*योगदानकर्ता–डॉ. प्रशांत खत्री, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
अनुवादक– डॉ. जे. एन. सिंह, अन्वेषक (एसएस) ग्रेड–I, सामाजिक अध्ययन प्रभाग, ओआरजीआई, गृह मंत्रालय।

उदाहरण के लिए, यह तर्क दिया जाता है कि एक अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान यूरोप में केवल उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में स्थापित हुआ, जबकि पंद्रहवीं सदी के बाद से ही नृजातीयवर्णन तथा मानवीय भौतिक–सांस्कृतिक भिन्नताओं के रूप में तथ्य बहुतायत में उपलब्ध थे। अतः यह सवाल उठाना भी सही है कि हम अनुशासन के उद्‌भव को केवल उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से ही क्यों मानते हैं। इस विषय के इतिहासकारों का मानना है कि उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक मानवीय भौतिक–सांस्कृतिक भिन्नताओं पर उपलब्ध तथ्यों का 'वैज्ञानिक' विश्लेषण नहीं किया गया था। अगर हम मानवविज्ञान को मानवीय भौतिक–सांस्कृतिक भिन्नताओं के ही एक अध्ययन के रूप में मान लें, तो कहा जा सकता है कि यह भिन्नताएँ लंबे समय तक महत्वपूर्ण रचनाओं के लिए जिम्मेदार रहीं। इन भिन्नताओं के सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है कि डार्विन की पुस्तक–*ऑन द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज* के प्रकाशन के बाद ही इनको परिप्रेक्ष्य में रखा गया और इन्हें विकासवाद के सैद्धांतिक आधार से विश्लेषित किया गया; जो मानवविज्ञान में पहले सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य 'उद्विकासवाद' के उद्‌भव का भी कारण बनी। सामान्यतः सिर्फ यह कह सकते हैं कि मानवविज्ञान एक अनुशासन के रूप में उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में ही उभरा, क्योंकि इस समय तथ्यों का संकलन 'यात्रियों', 'मिशनरियों', आदि के द्वारा लिखे गए संस्मरणों, यात्रा–वृत्तांतों और डायरी, आदि से प्राप्त हुए, जिन्हें उदविकासवाद के सिद्धांत के माध्यम से विश्लेषित किया गया। अतः स्पष्ट है कि यदि तथ्य असतत हैं, तो विश्लेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से इन असतत तथ्यों में एक पैटर्न देखने की कोशिश की जाती है। विशेष रूप से सामाजिक विज्ञानों में, इस पैटर्न को एक या एक से अधिक सैद्धांतिक तरीकों का उपयोग करके समझा जाता है। इसलिए तथ्य विश्लेषण मानवशास्त्रीय सिद्धांतों से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है। हम इस इकाई में आगे और अधिक विस्तृत तरीके से इस पहलू पर चर्चा करेंगे।

हमें 'विश्लेषण' शब्द को 'परिणाम देने वाली केवल कुछ सांख्यिकीय प्रक्रियाओं' तक ही सीमित नहीं करना चाहिए, बल्कि हमारी समझ को और अधिक व्यापक स्तर तक पहुँचाना चाहिए जहाँ विश्लेषण का अर्थ है– 'तथ्यों की समझ बनाना'। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि विश्लेषण एक ऐसी प्रक्रिया है, जो तथ्यों के सार को देखने की कोशिश करती है। आमतौर पर सूचना प्रौद्योगिकी के युग में (हमारा तात्पर्य व्हाट्सएप ग्रुप, फेसबुक, ट्विटर जैसी सोशल मीडिया प्लेटफोर्म में हमारी पसंद, नापसंद, दृष्टिकोण, किसी उत्पाद या राजनीतिक पार्टी के बारे में राय, हमारी आकांक्षाएं आदि सभी से है) बड़े राजनीतिक दलों के मीडिया प्रबंधकों एवं बड़े कॉर्पोरेट घरानों को इस तरह के तथ्यों या आंकड़ों की जरूरत होती है। जिनके विश्लेषण के माध्यम से उन्हें बाजार में किसी वाणिज्यिक उत्पाद के बारे में जनता के सामान्य रुझान का पता चल जाता है या उन्हें किसी नीतिगत निर्णय के बारे में बहुमत की समझ मिल जाती है। राजनीतिक दल विशेष रूप से उन मुद्दों पर ज्यादा दिलचस्पी दिखाते हैं, जो भावनात्मक हैं और चुनाव जीतने हेतु जिनका लाभ उठाया जा सकता है। सोशल मीडिया पर तथ्यों या आंकड़ों के विश्लेषण करने से उन्हें बहुत सारे ऐसे सुराग भी मिल जाते हैं, जिनसे अनभिज्ञ होने पर उनका नुकसान होने की संभावना थी। कोई हैरानी की बात नहीं है, कि इसी प्रकार हमारी अपनी भी कई व्यक्तिगत सूचनाएं एकत्र की जा रही हैं। कुछ विद्वानों और कानूनी विशेषज्ञों का विचार है कि इस तरह के तथ्य व्यक्ति की गोपनीयता भंग कर सकते हैं और राज्य को 'निगरानी

(सर्विलांस) राज्य' में बदलने की शक्ति रखते हैं। यह हमें किस हद तक प्रभावित करने वाला है, जाहिर है यह तो समय ही बताएगा।

उपरोक्त विमर्श हमें तथ्यों के महत्व और उसके विश्लेषण से अवगत कराता है। न केवल शोध से बल्कि यह मुद्दा हमारे दैनिक जीवन और उसके अनुभवों से निकटता से जुड़ा हुआ है।

अब इससे पहले कि हम तथ्य विश्लेषण को समझना शुरू करें, हमें तथ्यों की प्रकृति और प्रकार के बारे में कुछ जानकारी होनी चाहिए। तथ्य, व्यक्तियों की ऊंचाई और वजन के रूप में या लोगों की राय के रूप में हो सकता है, जैसा भी शोधकर्ता को निर्देशित किया गया हो। तथ्य में वे अवलोकन भी शामिल होते हैं, जो शोधकर्ता द्वारा किसी समुदाय के साथ रहते हुए किए जाते हैं। स्पष्टतः, संख्याओं का रूप लेने वाले तथ्यों या आंकड़ों को मात्रात्मक आंकड़ें कहा जाता है और जिन्हें शब्दों में दर्शाया जाता है उन्हें गुणात्मक आंकड़ें कहा जाता है। हालांकि बर्नार्ड (2006) का विचार है कि तथ्य विश्लेषण हमेशा प्रकृति में गुणात्मक होता है। यह सच भी है, क्योंकि अंततः हम यही तो जानना चाहते हैं कि संख्याएँ शब्दों में क्या कहती हैं। इसके विपरीत गुणात्मक आंकड़ों को मात्रात्मक विश्लेषण में रखना भी उतना ही संभव है, जितना की मात्रात्मक तथ्यों का गुणात्मक विश्लेषण। उदाहरण के लिए हमें यह जानने में रुचि हो सकती है कि किसी पाठ में कौन–सा शब्द कितनी बार प्रकट हुआ है। इसी प्रकार हम जानते हैं कि, गूगल हर साल सर्च इंजन पर सबसे ज्यादा सर्च किए जाने वाले शब्दों की सूची जारी करता है। इससे हमें कुछ हद तक यह अंदाजा हो जाता है कि दुनिया क्या सोच रही है और क्या ढूंढ रही है। गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के तथ्यों और उसके विश्लेषण को निम्न चार्ट की सहायता से समझा जा सकता है।

तालिका 10.1– तथ्य और विश्लेषण मैट्रिक्स

		तथ्य	
		गुणात्मक	मात्रात्मक
विश्लेषण	गुणात्मक	ए	बी
	मात्रात्मक	सी	डी

स्रोत– बर्नार्ड, 2006

उपरोक्त चार्ट को पढ़कर हम कह सकते हैं कि सेल 'ए' गुणात्मक तथ्यों के गुणात्मक विश्लेषण की संभावना का प्रतिनिधित्व करता है, सेल 'बी' मात्रात्मक तथ्यों के गुणात्मक विश्लेषण की संभावना का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं सेल 'सी' गुणात्मक तथ्यों के मात्रात्मक विश्लेषण और सेल 'डी' मात्रात्मक तथ्यों के मात्रात्मक विश्लेषण का प्रतिनिधित्व करता है। जब भी हम शोध में तथ्य विश्लेषण के बारे में सोचते हैं (यानि जो मस्तिष्क में विश्लेषण उभरता है), तो यह आम तौर पर सेल 'डी' प्रकार का विश्लेषण होता है। इसमें मात्रात्मक तथ्यों को आवृत्तियों, औसत, मोड और प्रतिशत में और संक्षिप्त करके प्रदर्शित किया जाता हैं। तथ्यों के इस तरह के संक्षिप्तीकरण के बाद भी सिद्धांतों और अवधारणाओं का प्रयोग करते हुए, उसके और अधिक व्याख्या की आवश्यकता होती है। इसका मतलब यह है कि मात्रात्मक तथ्य के गुणात्मक

विश्लेषण के बिना, मात्रात्मक तथ्य का मात्रात्मक विश्लेषण कमजोर और सतही ही रह जाएगा।

मेरे लिए 'तथ्य विश्लेषण' वाक्यांश के कम से कम दो अर्थ हैं। पहला, अनुसंधान की पूरी प्रक्रिया में एक ऐसा चरण जहाँ शोधकर्ता के पास पहले से ही तथ्य हैं, जिन्हें उसने क्षेत्र से एकत्र किया है। और अब अगला कार्य इसे व्यवस्थित और विश्लेषण करना है। दूसरा, तथ्य विश्लेषण एक बौद्धिक अभ्यास का प्रतिनिधित्व करता है, जो उसी क्षण से शुरू होता है जब हम किसी विशेष क्षेत्र या विषय पर शोध करने के बारे में सोचते हैं। इस स्तर पर, विश्लेषित तथ्यों को शोधकर्ता द्वारा क्षेत्र से एकत्र नहीं किया जा सकता, लेकिन इसमें वह अध्ययन भी शामिल हो सकते हैं, जिन्हें शोधकर्ता ने किसी विषय–विशेष पर या किसी विशेष मुद्दे पर अध्ययन किया रहा हो। इस अर्थ में विश्लेषण एक चरण नहीं है, बल्कि एक प्रक्रिया है, जो किसी शोध की शुरूआती अवधारणा से लेकर प्रस्तुतीकरण तक या किसी उपाधि के लिए शोध प्रबंध या थीसिस पूरी करने तक की सम्पूर्ण शोध गतिविधि में फैली हुई है। अगर आप ध्यान दें तो, शोध के प्रारंभ में हम जो परिकल्पना करते हैं, वह भी एक विश्लेषण का ही परिणाम है, जिसे हम शोध विषय पर साहित्यावलोकन के बाद पाते हैं।

इसके बावजूद, इस इकाई में हम अपने आप को पहले अर्थ (तथ्य संकलन के बाद वाला) तक ही सीमित रखेंगे, जिसे हम विश्लेषण कहते हैं। यह अनुसंधान की प्रक्रिया में उस एक चरण के रूप में समझा जाए, जहां एकत्र किए गए तथ्यों को व्यवस्थित करने के उपरांत विश्लेषण के लिए रखा गया है।

सामान्य तौर पर मानवविज्ञान में अनुसंधान पद्धति पर अधिकांश पुस्तकें दो अलग–अलग शीर्षकों या अध्यायों में तथ्य विश्लेषण के मुद्दे को प्रस्तुत करती है – गुणात्मक तथ्य विश्लेषण और मात्रात्मक तथ्य विश्लेषण। हालांकि, एच. रसेल बर्नार्ड (2006) ने अपनी पुस्तक– *रिसर्च मेथड्स इन एंथ्रोपोलॉजीः क्वालिटेटिव एंड क्वांटिटेटिव अप्रोच* में प्रत्येक प्रकार के विश्लेषण पर विशिष्ट अध्याय लिखने से पहले मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तथ्य विश्लेषणों को सामान्य परिचय के साथ प्रस्तुत किया है। विश्लेषण के सामान्य परिचय में बर्नार्ड का सुझाव है कि किसी भी प्रकार के तथ्य विश्लेषण में सबसे महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक डेटा मैट्रिक्स है। यह चरों का एक मैट्रिक्स है जिसमें हम चरों के बीच संबंध खोजने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए यदि हमने आयु, लिंग, शैक्षिक योग्यता, जाति, धर्म, क्षेत्र, आय आदि के बारे में बहुत सारी जानकारी एकत्र कर ली, तो इसमें यह जानना दिलचस्प होगा कि आय अन्य चर जैसे लिंग, शैक्षिक योग्यता, जाति आदि से कैसे संबंधित है। इस प्रकार का विश्लेषण किसी भी शोध में सबसे बुनियादी प्रकार है और हमें अपने शोध में विभिन्न चरों की एक संबंधपरक समझ प्रदान करता है। डेटा मैट्रिक्स को प्रोफाइल मैट्रिक्स और विश्लेषण को प्रोफाइल विश्लेषण के नाम से भी जाना जाता है। डेटा मैट्रिक्स या प्रोफाइल मैट्रिक्स कुछ इस तरह दिख सकता है :

तालिका 10.2– प्रोफाइल मैट्रिक्स

सहभागी	उम्र	लिंग	शिक्षा	जाति	धर्म	आय
1						
2						
3						
4						

स्रोतः बर्नार्ड, 2006 से संशोधनों के साथग्रहित

अपनी प्रगति जांचें

1) ऐतिहासिक रूप से मानवशास्त्र में तथ्य विश्लेषण को कैसे समझा जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) *ऑन द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज* नामक पुस्तक किसने लिखी है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) मात्रात्मक और गुणात्मक आंकड़ें क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

4) डेटा मैट्रिक्स की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

10.1 मानवविज्ञान का विश्लेषणात्मक संग्रथन (मोंटाज)

एक विषय और दर्शन के रूप में मानवविज्ञान बहुलता पर आधारित है। यह बहुलवाद को मान्यता देता है। एरिक वुल्फ ने एक बार कहा था कि 'यह विषय–वस्तु के बीच सीधा जुड़ता है, बजाय विषय के'। फ्रांज बोआस के लिए, मानवविज्ञान एक समग्र विषय/अनुशासन है, जिसमें सांस्कृतिक, जैविक, पुरातात्विक और भाषाई आयाम शामिल हैं। इससे एक बात शुरू से ही स्पष्ट हो जाती है कि जिस तरह के तथ्यों के साथ एक मानवविज्ञानी काम करता है, वह कई अलग–अलग रूप ले सकते हैं और जाहिर है कि इसके विश्लेषण के लिए अलग–अलग रणनीतियों/प्रविधियों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, पुरातत्वविद् पृथ्वी की खुदाई और कलाकृतियों को खोजते हैं, जिसका विश्लेषण न केवल अलग से बल्कि अन्य कलाकृतियों के सन्दर्भ में भी किया जाता है। इस प्रकार के संदर्भिक विश्लेषण को **सन्निहित विश्लेषण** (एम्बेडेड एनालिसिस) कहा जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि टेराकोटा की मूर्ति जैसी किसी विशेष कलाकृति का अर्थ, लोगों के जीवन में इसके संभावित उपयोग और महत्व को, केवल स्थानिक विश्लेषण के बाद ही समझा जा सकता है, जैसे कि मूर्ति कहाँ मिली थी और मूर्ति के साथ अन्य कौन सी कलाकृतियाँ मिली थीं। एक अन्य प्रकार का विश्लेषण जो पुरातत्वविद करते हैं, वह यह है कि वे किसी कलाकृति के समकालीन उपयोग को देखकर उसके संभावित उपयोग का पता लगाते हैं। इस प्रकार के विश्लेषण को **तुलनात्मक विश्लेषण** कहा जा सकता है।

इसी तरह, भाषाई मानवविज्ञानी विभिन्न प्रकार की भाषाओं से संबंधित हैं। वह किसी विशेष भाषा की उत्पत्ति और विकास के संबंध में प्रश्न पूछ सकते हैं। इस प्रकार का प्रश्न किसी भाषा के ऐतिहासिक विश्लेषण या विकासवादी विश्लेषण की ओर ले जाता है। एक मानवविज्ञानी की दो या दो से अधिक भाषाओं में रुचि हो सकती है और वह इन भाषाओं में समानता और अंतर जानना चाहता है। इस प्रकार का विश्लेषण पुनः एक तुलनात्मक विश्लेषण है। इस तरह के भाषाई विश्लेषण का एक बहुत ही दिलचस्प उदाहरण ट्रुटमैन (2007) द्वारा प्रस्तुत किया गया है। उनका तर्क है कि भारत में ब्रिटिश शासन के प्रारंभिक चरण में, अंग्रेजों ने संस्कृत और अन्य यूरोपीय भाषाओं के बीच बहुत समानता पाई। इस खोज ने उन्हें यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित किया कि ब्रिटिश और भारतीय आबादी किसी न किसी तरह से एक–दूसरे से संबंधित हैं और उन्होंने सोचा कि उन्होंने वास्तव में अपने लंबे समय से खोए हुए भाई–बहनों को पाया है। इसे ब्रिटिश शासन के इंडो–मैनिक चरण के रूप में चिह्नित किया गया था, जिसमें बहुत सारे संस्कृत ग्रंथों का अंग्रेजी और अन्य यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद किया गया था। इसके अलावा एक मानवविज्ञानी किसी विशेष भाषा के उपयोग में रुचि ले सकता है। वह इस बारे में प्रश्न पूछ सकता है कि विभिन्न संदर्भों में शब्दों का अलग–अलग अर्थ कैसे होता है? शब्दों के स्वर (ध्वनि) और शब्द का प्रयोग करने वाले व्यक्ति के साथ शब्द का अर्थ कैसे बदलता है? इस प्रकार का विश्लेषण अन्य शब्दों, वाक्यों और संदर्भ के संबंध में अर्थ जानने में रुचि रखता है। भाषा के इस तरह के विश्लेषण को संरचनात्मक विश्लेषण कहा जाता है। जो यह समझने की कोशिश करता है कि भाषा के रोजमर्रा के उपयोग में कौन से अंतर्निहित ढांचे का प्रतिनिधित्व किया जाता है? एक भाषा कैसे विशेष प्रभुत्व स्थापित कर लेती है और दूसरी अधीनस्थ हो जाती है? किस प्रकार की भाषाएं सार्वजनिक रूप से

प्रतिबंधित हैं और किस प्रकार की भाषाएं राजनीतिक रूप से सही हैं? भाषा के प्रयोग में लिंग भेद क्या हैं?

दूसरी ओर जैविक मानवविज्ञानी, तथ्यों के एक अलग समूह से संबंधित हैं। उनके आंकड़ों में ऊंचाई, वजन, रक्तचाप, नाड़ी–दर, मानव और जानवरों की हड्डियों के माप, मानव शरीर पर विभिन्न माप आदि जैसे ज्यादातर आंकड़ें (नंबर) शामिल होते हैं। परंपरागत रूप से जैविक मानवविज्ञानी कुछ की शरीर की माप के आधार पर दुनिया भर में मानव आबादी को वर्गीकृत करने में रुचि रखते थे। इस प्रकार उनके विश्लेषण ने मानव आबादी को विभिन्न नस्लीय समूहों में वर्गीकृत किया। हालाँकि, विभिन्न मानव समूहों के आनुवंशिक संविधान के बाद के विश्लेषणों पर यह महसूस किया गया कि नस्लीय श्रेणियों के बजाय हम वास्तव में मानव आबादी के भौतिक और आनुवंशिक लक्षणों के उन्नयन के बारे में बात कर सकते हैं जिन्हें प्रविनिकी (क्लाइन) कहा जाता है।

सामाजिक मानवविज्ञानी इनसे बिलकुल अलग तरह के तथ्यों से दो–चार होते हैं। इसमें ज्यादातर शब्द शामिल होते हैं, सामान्यतः जिन्हें मानवविज्ञानी सामाजिक व्यवस्थानुक्रम में स्वयं के अवलोकन द्वारा प्राप्त करते हैं। इस तरह के तथ्यों को अलग तरह से समझने एवं विश्लेषण हेतु अलग तरीके की आवश्यकता होती है। इन्हीं तथ्यों को नृजातिविज्ञान आंकडे एवं विश्लेषण को नृजातिविज्ञान विश्लेषण के रूप में जाना जाता है।

उपरोक्त चर्चा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि तथ्य विश्लेषण दो कारकों पर निर्भर करता है :

- तथ्य का प्रकार कैसा है। यह इस पर निर्भर करेगा की उसमें शब्द शामिल हैं या संख्याएँ, उसी आधार पर विश्लेषण क्रमशः गुणात्मक या मात्रात्मक होगा।
- वे प्रश्न जो हम तथ्यों से पूछते हैं। हम गुणात्मक तथ्यों से मात्रात्मक प्रश्न पूछ सकते हैं (जैसा कि परिचय में चर्चा की गई है)।

इससे हमें गुणात्मक और मात्रात्मक विश्लेषण दोनों की प्रक्रिया के बारे में अधिक जानकारी मिलती है। आगे के खंड प्रत्येक प्रकार के विश्लेषण पर अलग से चर्चा करेंगे।

अपनी प्रगति जांचें

5) सन्निहित (एम्बेडेड) विश्लेषण क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6) संरचनात्मक विश्लेषण बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

7) नृजातिविज्ञान (एथनोग्राफिक) विश्लेषण का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

10.2 गुणात्मक विश्लेषण

इसे पाठ्य विश्लेषण (टेक्स्चुअल एनालिसिस) के रूप में भी जाना जाता है। मानवविज्ञान में, विशेष रूप से सामाजिक मानवविज्ञान में, बड़ी मात्रा में तथ्य ग्रंथों के रूप में मिलता है। ऐसे पठनीय तथ्यों का संग्रह मानवविज्ञान का एक अभिन्न अंग रहा है। मानवशास्त्रीय तथ्य संकलन इस आधार बिंदु पर निर्देशित था कि मानवविज्ञानियों द्वारा अध्ययित समाजों में तीव्र परिवर्तन होने के कारण वह जल्द ही खत्म हो जाएंगे इसलिए सभी सांस्कृतिक तथ्यों को हमेशा के लिए समाप्त हो जाने से पहले एकत्र करना आवश्यक था। इस तरह की नृजातिविज्ञान (इथनोग्राफी) को **रक्षित नृजातिविज्ञान** (सेल्व्ज इथनोग्राफी) के रूप में जाना जाता था। जाहिर है कि ऐसे सांस्कृतिक तथ्यों की संख्या बहुत थी, जिसका विश्लेषण किया जाना था। इसलिए पाठ्य विश्लेषण की महान मानवशास्त्रीय परंपरा का उदय हुआ। आज भी पाठ्य विश्लेषण की इस परंपरा में कोई सर्वमान्य तरीका नहीं है। बल्कि इसमें कई विधियों का संग्रह है, जिनमें व्याख्यात्मक विश्लेषण, प्रदर्शन विश्लेषण, सामग्री विश्लेषण और आधारभूत सिद्धांत शामिल हैं।

10.2.1 तथ्य प्रबंधनः कोडिंग, मेमोइंग और कॉन्सेप्ट मैपिंग

इससे पहले कि हम विश्लेषण का कार्य शुरू करें, हमें अपने तथ्य को कुछ हद तक संसाधित करने की आवश्यकता है। हम तथ्य की मात्रा को पाठ (टेक्स्ट) के रूप में व्यवस्थित किए बिना उसके साथ काम नहीं कर सकते। किसी भी तरह के विश्लेषण में यह पहला चरण है। हम इस चरण को विश्लेषण के तथ्य प्रबंधन चरण का नाम भी दे सकते हैं। आजकल यह चरण विभिन्न सॉफ्टवेयरों की मदद से आसानी से पूरा कर लिया जाता है, जो तथ्य को व्यवस्थित करने में मदद करते हैं। हालांकि, साधारण रूप से प्रक्रिया को समझने के लिए हम यह मान लेते हैं कि हमें तथ्यों का व्यक्तिगत प्रबंधन यानि मैनुअल प्रबंधन ही करना है। विश्लेषण शुरू होने से पहले तथ्यों को व्यवस्थित करने का पहला कदम **कोडिंग** है। हमें एकत्र किए गए आंकड़ों या तथ्यों

को विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत वर्गीकृत करने की आवश्यकता है। ये वर्गीकरण वास्तव में वे अवधारणाएं हैं जिनका उपयोग बाद में विश्लेषण के लिए किया जाएगा। उदाहरण के लिए सामाजिक आंदोलन पर किसी तथ्य को आंदोलन के इतिहास, आंदोलन की प्रगति में महत्वपूर्ण घटनाओं, आंदोलन और राष्ट्रीय राजनीति, आंदोलन और मानवाधिकार आदि नामों से वर्गीकृत किया जा सकता है। अलग–अलग फाइलें और फोल्डर्स बनाए जा सकते हैं. जिनमें इस तरह के तथ्य अपने वर्गीकृत नामों के साथ संग्रहीत (सेव) किए जा सकते हैं। कोडिंग के बाद हमारा अगला कदम **संस्मरण (मेमोइंग)** होगा। मेमोइंग में, शोधकर्ता कोड और सिद्धांतों से संबंधित संक्षिप्त संस्मरण (मेमो) लिखता है जिनका उपयोग विश्लेषण में किया जा सकता है। मेमोइंग को स्वयं या/और अन्य व्यक्तियों, जो इस शोध परियोजना में शामिल हैं, के लिए नोट्स लिखने के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है। सरल शब्दों में यह एक अवधारणात्मक कोड या किसी सिद्धांत का विस्तार है, जो अवधारणा से जुड़ा हुआ है। कभी–कभी ऐसा होता है कि विश्लेषण के दौरान हम उस कोड का अर्थ भूल जाते हैं जो हमने दिया था। इसलिए इसे याद रखने के लिए हम इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए इसे लिख सकते हैं। इस प्रक्रिया को मेमोइंग कहा जाएगा। कोडिंग और मेमोइंग के बाद एक और कदम **अवधारणा मानचित्रण** (कॉन्सेप्ट मैपिंग) का है। अवधारणा मानचित्रण में आरेख बनाए जाते हैं जो यह दर्शा सकते हैं कि विभिन्न अवधारणाएँ एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं। सरल शब्दों में कहें तो अवधारणा मानचित्रण उन अवधारणाओं का एक सचित्र मानचित्र है, जिसे हमने शुरुआत में कोडित किया था। तो, उपनिवेशवाद, मानवाधिकार और राष्ट्रीय राजनीति सभी किसी सामाजिक आंदोलन के इतिहास से जुड़े हुए हैं। अवधारणा मानचित्र, विश्लेषण करते समय अपने विचारों को व्यवस्थित करने में हमारी सहायता करते हैं। एक अवधारणा मानचित्र निम्न प्रकार दिख सकता है:

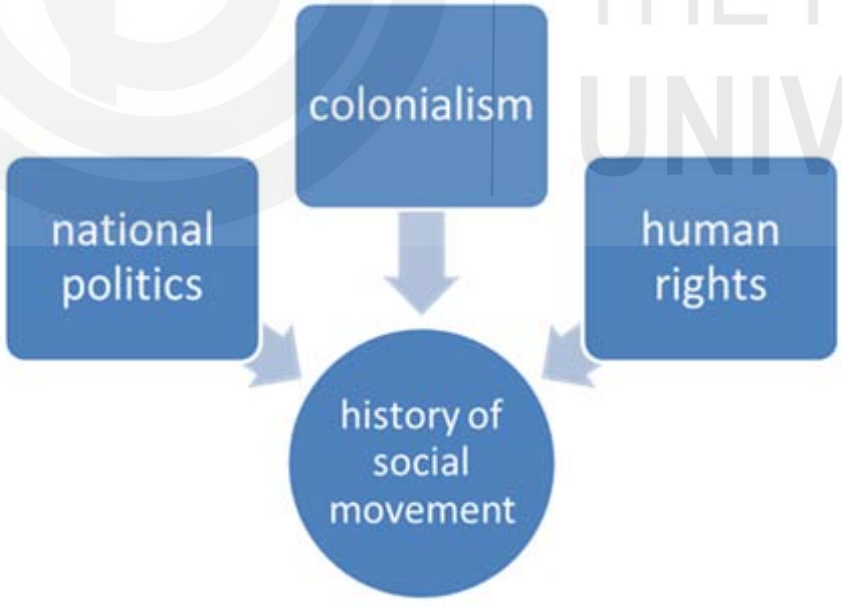

चित्र 10.1– अवधारणा मानचित्र

तथ्यों के इस प्रारंभिक प्रसंस्करण को समझने के बाद अब हम विश्लेषण के चरण में प्रवेश कर सकते हैं। जैसा कि ऊपर कहा गया है, मानवविज्ञान में, गुणात्मक तथ्यों के साथ निम्न प्रकार के विश्लेषण सामान्यतः देखने को मिल जाते हैं।

10.2.2 व्याख्यात्मक और प्रदर्शात्मक विश्लेषण

व्याख्यात्मक विश्लेषण विभिन्न मिथकों, लोककथाओं, कहानियों, साक्षात्कारों आदि जैसे सांस्कृतिक तथ्यों के अर्थ को समझने पर आधारित है। यह व्याख्या बड़े सांस्कृतिक पैटर्न के प्रकाश में होनी चाहिए। मानवविज्ञान में व्याख्यात्मक विधि व्याख्यात्मक परंपरा का ही एक विस्तार है। जिसमें बाइबिल के पाठ को गॉड के शब्द के रूप में माना जाता था। जिसको किसी के द्वारा गॉड के शिष्यों के लिए व्याख्या करने की आवश्यकता होती है। क्लिफोर्ड गीर्ट्ज और पॉल रिकोयूर ने पाठ की व्याख्या के विचार को संस्कृति और सांस्कृतिक प्रदर्शन तक विस्तृत किया है। गीर्ट्ज के लिए संस्कृति, ग्रंथों का एक संयोजन है और इसलिए पाठ की व्याख्या करके संस्कृति को जाना जा सकता है। इसी तरह, रिकोयूर के लिए, मानव व्यवहार का अपने आप में एक अर्थ है, इतना ही नहीं मुक्त–प्रवाह वाले व्यवहार को भी एक पाठ के रूप में समझा जा सकता है, किन्तु इसे व्याख्या की आवश्यकता होगी (बर्नार्ड, 2006)। गीर्ट्ज द्वारा संस्कृति को पाठ के एक प्रकार के रूप में देखा जाता है, जिसे समझने के लिए इसको पढ़ने और स्पष्ट करने की आवश्यकता होती है। मानव व्यवहार प्रतीकात्मक है और इसका अर्थ अपने विशेष संदर्भ में ही जाना जा सकता है (गीर्ट्ज, 1973)। उपरोक्त बिंदुओं को और अधिक स्पष्ट समझने के लिए, हमें बाली के मुर्गों की लड़ाई (कॉकफाइट) के मामले को देखना चाहिए, जिसे व्याख्यात्मक और प्रतीकात्मक प्रतिमानों के माध्यम से किए गए सबसे लोकप्रिय अध्ययनों में से एक माना जाता है। इंडोनेशिया के बाली में अपने क्षेत्र अध्ययन के दौरान गीर्ट्ज जिस गाँव में रह रहा था वहां पर उसने हर गली–नुक्कड़ में मुर्गों की लड़ाई की घटना को देखा। हालाँकि, इंडोनेशिया में मुर्गों की लड़ाई गैर–कानूनी है, जैसा कि गीर्ट्ज ने घटना की व्याख्या में वर्णित किया है, फिर भी यह बाली में आम है। गीर्ट्ज ने *कॉकफाइटिंग* की इस परम्परा को केवल एक खेल के बजाय सामाजिक प्रदर्शन के रूप में समझने की कोशिश की। कॉकफाइट का उनके लिए प्रतीकात्मक महत्व था, जिसकी उन्होंने व्याख्या कर रूपक और प्रतीकात्मक अर्थ में वर्णन किया। उन्होंने कहा कि मुर्गे केवल पक्षी नहीं हैं जो कभी–कभार लड़ने के लिए मैदान में उतारे जाते हैं, बल्कि मालिक और उसके व्यक्तित्व का प्रदर्शन और प्रतिनिधित्व करते हैं। बाली के लोग अपने मुर्गों का बहुत ख्याल रखते हैं और इसे अपनी मर्दानगी और आंतरिक आत्मा का प्रतिनिधि मानते हैं। इतना ही नहीं, मुर्गों को राक्षसों और शैतानों का प्रतीक मानते हुए लड़ाई के दौरान निकले हुए रक्त द्वारा राक्षसों को खुश करने के लिए, इनकी आपस में लड़ाई कराई जाती है। कॉकफाइटिंग का उपयोग अदालत, युद्धों, राजनीतिक प्रतियोगिताओं, विरासत विवादों आदि की स्थितियों को स्पष्ट करने और आम बातचीत में सामाजिक मुहावरे के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। जाहिर है यह कॉकफाइट की एक प्रतीकात्मक प्रकृति को ही दर्शाता है, जहां यह समूह, गैर–समूह की वफादारियों और संघर्षों का एक अभिव्यंजक प्रदर्शन बन जाता है। कॉकफाइट मानव अस्तित्व के दो आयामों का प्रतिनिधि भी है– मनोवैज्ञानिक आयाम और सामाजिक आयाम। मनोवैज्ञानिक आयाम में, व्यक्ति मुर्गा में ही स्वयं या अपने व्यक्तित्व के विस्तार को देखता है। दूसरी ओर सामाजिक आयाम में, खेल के प्रदर्शन के माध्यम से सार्वजनिक समझौते और उनके व्यक्तित्व का पारस्परिक प्रभाव व्यक्त होता है। कॉकफाइट बड़े सामाजिक मैट्रिक्स का अनुकरण है जहां विभिन्न रिश्तेदार समूहों, वर्गों और अन्य सामाजिक समूहों और पदानुक्रम के मध्य प्रतिरोध एवं सहयोग, सुलह–समझौते की शक्ति और सामाजिक प्रस्थिति का प्रतिनिधित्व होता है (गीर्ट्ज, 1973)।

10.2.3 सामग्री विश्लेषण और आधारित सिद्धांत (ग्राउंडेड थियरी)

पाठ्य विश्लेषण की एक विधि के रूप में, सामग्री विश्लेषण एक बहुत विस्तृत और प्रभावी तरीका है। सामग्री विश्लेषण तथ्य विश्लेषण की एक निगमनात्मक तकनीक है, जिसमें पहले कोई परिकल्पना बनाई जाती है और फिर पाठ का विश्लेषण करके इसका परीक्षण किया जाता है। यह आधारभूत सिद्धांत की अन्य पाठ्य विश्लेषण पद्धति के बिल्कुल विपरीत है, जहां दृष्टिकोण आगमनात्मक है जिसका अर्थ है कि पाठ का पूरी तरह से विश्लेषण करने के उपरांत ही कोई परिकल्पना बनाई जा सकती है। सामग्री विश्लेषण का उद्देश्य किसी पाठ तथ्य से अर्थ निकालना है। ध्यातव्य है कि, सामग्री विश्लेषण को लागू करने के लिए यह जरूरी नहीं है कि पाठ शब्दों से ही बना हो, सामग्री विश्लेषण सरलता से चित्रों, फिल्मों, कलात्मक कार्यों एवं उनके चित्रों पर भी लागू किया जा सकता है।

सामग्री विश्लेषण, विश्लेषण हेतु सामग्री की पहचान के साथ शुरू होता है। सामग्री शब्द, चित्र, प्रदर्शन आदि कुछ भी हो सकती है। अगला कार्य सामग्री से विश्लेषण की इकाई की पहचान करना है। फिर इस इकाई को चरों में विभाजित कर एक चर मैट्रिक्स का निर्माण किया जाता है जिसे बाद में परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए मात्रात्मक रूप से विश्लेषण किया जाता है। इसे एक उदाहरण की मदद से समझने के लिए– विपुल मुद्गल (2011) ने प्रमुख समाचार पत्रों में, समाचारों के संदर्भ में ग्रामीण भारत को दिए गए कवरेज का अध्ययन करने के लिए इस तकनीक का इस्तेमाल किया। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए सभी समाचार पत्रों में से तीन हिंदी और तीन अंग्रेजी (उनके पाठकों के अनुसार चयनित) में छह समाचार पत्रों का चयन किया। विश्लेषण के लिए कुल 968 ग्रामीण समाचारों का चयन किया गया।

एक कोडिंग शीट बनाकर उसमें 13 श्रेणियां बनाई गईं– (1) अखबार का नाम, (2) कहानी का स्थान, (3) कहानी का प्रदर्शन (स्थिति, आकार), (4) दृश्य (कहानी के साथ दिए गए), (5) कहानी का प्रकार (लेखक, आदि), (6) कहानी की मूल उत्पत्ति (आधार), (7) प्राथमिक विषय, (8) अधिकार–आधारित विषय, (9) कहानी सेटिंग/संदर्भ बिंदु, (10) कहानी का प्राथमिक स्रोत, (11) द्वितीयक स्रोत, (12) कहानी का झुकाव, और (13) समग्र टिप्पणी। ऊपर उल्लिखित प्रत्येक श्रेणी को उनकी अनुकूलता के अनुसार 968 समाचारों द्वारा भरा गया था। कभी–कभी प्रत्येक श्रेणी में उप–श्रेणियां या उप विषय भी होते थे। उदाहरण के लिए प्राथमिक विषय को पुनः कई गैर–कृषि विषय में बांटा गया।

तदुपरांत इन विषयों को भी आगे नक्सल संबंधी आपदा, दुर्घटना और अन्य प्रकार की हिंसाओं के रूप में उप–वर्गीकृत किया गया। इसी तरह विकास विषय को भी खेती, सामान्य विकास और ग्रामीण पर्यावरण के मुद्दों में बाँट दिया गया। इस मैट्रिक्स और कोडिंग की प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद, प्रत्येक श्रेणी में आने वाले समाचारों की संख्या की गणना करने के लिए एस पी एस एस सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया था।

तालिका 10.3– समाचार पत्रों में विषय

गैर–कृषि विषयक (35.8%)		
1	नक्सली संबंधी हिंसा	13.7%
2	अन्य हिंसा संबंधी विषय	11.3%
3	आपदाएं/विपदाएँ	7.1%
4	दुर्घटना/अपराध	3.7%

स्रोत– मुद्गल, 2011

इसके अलावा शहरी मुद्दों की तुलना में ग्रामीण मुद्दों को प्रदान किए गए कुल स्थान के लिए छह समाचार पत्रों का भी विश्लेषण किया गया था।

एक उपकरण के रूप में सामग्री विश्लेषण की व्यापक प्रासंगिकता है। हाल ही में इसका उपयोग बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में काम करने वाले मानवविज्ञानीयों द्वारा संकलित आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए किया गया है। इसी तरह के एक अध्ययन का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के बदायूं जिले में बाढ़ के दृश्य और पठनीय सामग्री की जांच करना था। इस विश्लेषण की सामग्री में बाढ़ के विषय पर बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा लिखे गए निबंध और आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए चित्रों के रूप में पाठ्य तथ्य शामिल थे। निबंध के रूप में पाठ्य तथ्यों को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था जिसमें बाढ़ के प्रभावों, बाढ़ के दौरान आने वाली समस्याओं और समुदाय के अनुकूलता के पैटर्न को दर्शाया गया था। इन तीन श्रेणियों को आगे अलग–अलग विषयों में उप–विभाजित किया गया था जो निबंधों के सावधानीपूर्वक पढ़ने के दौरान प्राप्त हुए थे। उदाहरण के लिए प्रभाव की श्रेणी को आर्थिक नुकसान, बीमारी, मिट्टी का कटाव, मानव हानि, मूल्य वृद्धि, संचार विफलता और शिक्षा जैसे विषयों में विभाजित किया गया था। इसके बाद यह देखने के लिए विश्लेषण किया गया कि उपरोक्त प्रत्येक विषय में कितने प्रतिशत लोग आते हैं। चित्र और चित्रों के रूप में दृश्य तथ्य का विश्लेषण करने के लिए सामग्री विश्लेषण भी एक बहुत शक्तिशाली उपकरण है। फील्डवर्क के दौरान जो चित्र एकत्र किए गए थे, उन्हें सामग्री विश्लेषण के लिए रखा गया था। उनमें जो दर्शाया गया था, उसके लिए चित्रों का विश्लेषण किया गया था। यह बदले में बाढ़ से प्रभावित लोगों के चेतन और अवचेतन मन और बाढ़ के दौरान और बाद में उनकी प्राथमिकताओं को दर्शाता है। चित्र के रूप में दृश्य डेटा ने सार्वजनिक भवनों, मनुष्यों, मदद के लिए रोते हुए लोगों, पेड़ों, जानवरों, पक्षियों, नावों आदि को दिखाया। उनकी घटना की पुनरावृत्ति लोगों की प्राथमिकताओं और उनके प्रभुत्व का एक पैमाना है (खत्री एवं अन्य, 2012)। इसी तरह, कोवान और ओश्ब्रायन ने थ्रिलर फिल्मों का अध्ययन करने के लिए सामग्री विश्लेषण का इस्तेमाल किया। वे जानना चाहते थे कि इन फिल्मों में साइको किलर्स द्वारा लैंगिंक आधार पर किस प्रकार पीड़ितों में अंतर किया गया। उन्होंने यह भी समझने की कोशिश की कि पीड़ितों की ऐसी क्या विशेषताएं हैं, जो उन्हें ऐसे हत्यारों

के हाथों शिकार बनाती हैं। उन्होंने 56 ऐसी फिल्मों को चुना जिनमें कुल 474 पीड़ित थे। उन्हें उनके लिंग और जीवित रहने की दर के अनुसार कोड दिया गया। परंपरागत रूप से ऐसा माना जाता है कि ऐसी फिल्मों में पीड़ित महिलाएं होंगी जबकि हत्यारा और हमलावर पुरुष होंगे। हालांकि कोवान और ओश्ब्रायन ने पाया कि ज्यादातर मामलों में हत्यारा निश्चित रूप से पुरुष था लेकिन पीड़ितों में पुरुष और महिलाएं दोनों थीं। साथ ही मारे गए लोगों के चरित्र भी कारण के रूप में रहे जैसे कि यौनिक रूप से शुध्द महिलाओं पर हमले कम हुए जबकि जो पुरुष अहंकारी और दबंग थे उन पर हमलों की संख्या अधिक थी।

सामान्य रूप से, पाठ्य विश्लेषण समाज के सामाजिक–सांस्कृतिक स्थितियों को समझने के लिए उपलब्ध पाठ से विषयों को निकालने से संबंधित है। सामग्री विश्लेषण इस दिशा में भी एक प्रभावी उपकरण है कि गुणात्मक तथ्यों को मात्रात्मक विश्लेषण में कैसे रखा जा सकता है जो विश्लेषणात्मक श्रेणियों को प्रकट करता है। मानवशास्त्रीय तथ्यों की प्रकृति ऐसी है कि उसके तथ्य बैंक में शब्द, चित्र, प्रदर्शन और प्रतीक ज्यादा होते हैं, जिन्हें शोध प्रश्न की समग्र तस्वीर प्राप्त करने के लिए सामग्री विश्लेषण में रखा जाना चाहिए और उनकी जांच–पड़ताल की जानी चाहिए।

यह विमर्श हमें दूसरे प्रकार के विश्लेषण में ले जाता है, जिसे हम मात्रात्मक विश्लेषण कहते हैं।

अपनी प्रगति जांचें

8) रक्षित मानवविज्ञान से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

9) कोडिंग, मेमोइंग और कॉन्सेप्ट मैपिंग पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

10) व्याख्यात्मक और प्रतीकात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से गेर्टेज ने बाली के कॉकफाइट की व्याख्या कैसे की? चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

11) सामग्री विश्लेषण की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

10.3 मात्रात्मक विश्लेषण

इस तरह के विश्लेषण को अर्ल बब्बी (2007) द्वारा 'अवलोकन को प्रतिबिंबित करने वाली घटनाओं का वर्णन और व्याख्या करने के उद्देश्य से टिप्पणियों का संख्यात्मक प्रतिनिधित्व और बदलाव' के रूप में परिभाषित किया गया है। मात्रात्मक विश्लेषण को उन तकनीकों के रूप में भी परिभाषित किया जाता है, जिनका उपयोग शोधकर्ताओं द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण में संख्यात्मक तथ्य भरने के लिए किया जाता है। इस प्रकार के विश्लेषण पर पिछली इकाई में विस्तार से चर्चा की गई है (देखें इकाई 9)। यहाँ सिर्फ यह बताना पर्याप्त होगा कि अधिकांश शोध विधियों की पुस्तकों में मात्रात्मक विश्लेषण को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है– एकल चर विश्लेषण, द्विचर विश्लेषण और बहुभिन्नरूपी विश्लेषण। अविभाज्य विश्लेषण को एकल चर के विश्लेषण के रूप में परिभाषित किया गया है। इस प्रकार के विश्लेषण के माध्यम से हम चर के विभिन्न गुणों का वर्णन करते हैं। उदाहरण के लिए एक सैम्पल की 'औसत आयु' की गणना चर 'आयु' का एक अविभाज्य विश्लेषण है। इसी तरह किसी मुद्दे पर सहमत या असहमत लोगों के प्रतिशत की गणना करना एकतरफा विश्लेषण का एक उदाहरण है, जिसे 'आवृत्ति वितरण' कहा जाता है। अविभाज्य विश्लेषण का उद्देश्य व्याख्यात्मक के बजाय वर्णनात्मक है क्योंकि इसमें दो या दो से अधिक चर के बीच संबंध शामिल नहीं है। द्विचर विश्लेषण वह है, जिसमें दो चर शामिल होते हैं। इस विश्लेषण में दो चरों का एक साथ विश्लेषण किया जाता है, जिसका उद्देश्य दोनों के बीच संबंध निर्धारित करना या खोजना होता है। सहसंबंध गुणांक द्विचर विश्लेषण का एक उदाहरण है। एक बहुभिन्नरूपी विश्लेषण वह है जहां हम कई चरों के बीच संबंध ढूंढते हैं उदाहरण के लिए हमें लोगों की धार्मिकता पर उम्र, लिंग और सामाजिक वर्ग के प्रभाव को जानने में रुचि हो सकती है।

अपनी प्रगति जांचें

12) अर्ल बब्बी ने मात्रात्मक तथ्य को कैसे परिभाषित किया है?

.....

.....

.....

.....

.....

10.4 सारांश

तथ्य विश्लेषण पर केन्द्रित यह इकाई विद्यार्थियों को शोध के दौरान क्षेत्र से एकत्र किए गए तथ्यों की व्यवस्थित रूप से जांच के साथ आगे बढ़ने में मदद करेगी। जैसा कि पाठ में उल्लेख किया गया है, हमें विभिन्न प्रकार के तथ्य प्राप्त होते हैं और कभी–कभी तो तथ्यों में हमारे अनुमान से भी ज्यादा विविधता होती है। अंततः यह वह तरीका है, जिससे हम उचित ज्ञान का उपयोग करके अपने निष्कर्षों का विश्लेषण करते हैं। यह हमें वैध ज्ञान के निर्माण में सहायता करता है। इसलिए विद्यार्थियों की सहायता के लिए, पाठ हमें तथ्य विश्लेषण में मदद करने वाली विभिन्न प्रकार की विधियों से होकर गुजारता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि तथ्य संग्रह किस प्रकार किया गया है।

10.5 संदर्भ

Babbie, E. (2007). *The Practice of Social Research*. Belmont: Wadsworth Publications.

Bernard, H. R. (2006). *Research Methods In Anthropology: Qualitative and Quantitative Approaches*. Oxford: AltaMira Press.

Cowan, G., and M. O'Brien. (1990). Gender and survival vs. death in slasher films—A content analysis.*Sex Roles* 23:187–96.

Geertz, C. (1973). *The Interpretation of Cultures*. New York: Basic Books Inc.

Khattri, P., Joshi, P.C., Minakshi and Guha-Sapir, D. (2012). Projections of Disaster: Investigations into Visual and Textual Images of Flood in Badaun, Uttar Pradesh. *Anukriti*.2(5).

Mudgal, V. (2011). Rural Coverage in The Hindi And English Dailies. *Economic and Political Weekly*.XLVI(35).

Trautmann, T.R. (2007). *The Aryan Debate*. New Delhi: Oxford University Press

10.6 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

1) खंड 10.0 में पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें

2) चार्ल्स डार्विन

3) खंड 10.0 देखें

4) खंड 10.0 में छठवें पैराग्राफ का संदर्भ लें

5) खंड 10.1 में पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें

6) खंड 10.1 में दूसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें

7) खंड 10.1 में चौथे पैराग्राफ का संदर्भ लें

8) खंड 10.2 में पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें

9) खंड 10.2.1 में पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें

10) खंड 10.2.2 देखें

11) खंड 10.2.3 देखें

12) खंड 10.3 देखें

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY